आओ एक पेड़ लगाएं

सोचता हूँ फूलों में
रंग कहाँ से आते है,
खुशबू ओर नज़ाक़त भी
फूल कहाँ से लाते है,
सूरज की किरणों में रमकर`
खिलते हैं मुरझाते है,
पुष्पो के रंगों को देखकर
सब गाते हैं शरमाते हैं,
लाल गुलाब ओर श्वेत चमेली
प्रेम प्रतीक बन जाते है
गुलमोर दाउदी जूही मोगरा
खुशबू ही खुशबू फैलाते है,
फैलाकर खुशबू ना जाने कब
पुष्प फल भी बन जाते है
हर मानव की सुधा मिटाकर
अपना धर्म निभाते है
आओ धरती पर शीश नवाएँ
अपने जीवन को महकाएं,
पेड़ों के सँग झूम झूमकर
वातावरण को शुद्ध बनाएँ,
पर्यावरण दिवस पर शपथ लेकर
आओ एक एक पेड़ लगाएं,
मानव के लिए इस वसुंधरा को
स्वर्ग से सुंदर जगह बनाएं,

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**